को ईंसों के रूप में गिना जाता है। लोग जानते हैं कि उनका आचरण कानून और राज्य की दृष्टि से अपराध है फिर भी करोड़ों रुपए की तस्करी रोज होती है। समाज में भी ऐसे अनेक कृत्य हैं जो कानून की दृष्टि से मान्य होते हुए भी सामाजिक परम्पराओं के विरोधी हैं

राज्य और कानून से व्यक्ति सदैव बच नहीं सकता है, अतः मनुष्य को ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए। अपने इस भ्रष्ट आचरण के लिए व्यक्ति को सजा अवश्य मिलती है। समाज विरुद्ध कार्य करने से सामाजिक प्रतिष्ठा गिरती है और सामाजिक बहिष्कार कर दिया जाता है। इससे मानसिक शांति नष्ट हो जाती और व्यक्ति का जीवन दुःखमय हो जाता है।

जो कार्य राज्य और समाज की दृष्टि से बुरा हो ... न हो परन्तु धर्म की दृष्टि से निन्द्य हो तो ... त्याग करना चाहिए। हिंसा, झूठ, चोरी, ... अहंकार आदि धार्मिक दृष्टि ... है। इनके विरुद्ध कार्य करने से व्यक्ति ...

यदि मानव को सुखी और शान्त बनना है तो [illegible]
[illegible] होकर धन को पूरा कम करना होगा। तभी वह
जीवन में आत्मचिन्तन एव आध्यात्मिक [illegible] के लिये
कुछ कर पायेगा। संतों ने लोक कल्याण [illegible]
[illegible] है कि—

साईं इतना दीजिये जामे कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ साधु न भूखा जाय॥

परिवार के व्यक्तियों को भी ऐसा ही [illegible] Trained
किया जाय कि वे भी व्यय [illegible] एव सुख
[illegible] लिप्सा में न उलझें। कष्ट सहकर भी [illegible]
और आकर्षित न हों। कमाई के अनुसार ही [illegible]
[illegible] रहन-सहन रखें। [illegible]
[illegible] जीवन में अर्थ की समस्या नहीं रहती। जीवन
[illegible] एव चिन्ता [illegible] है। [illegible]
[illegible] बढ़ती है और [illegible] है।
[illegible] हमें [illegible] कि [illegible]
[illegible] कर इसके [illegible]।

यदि मानव को सुखी और शान्त बनना है तो [illegible] त्यागी होकर धन की भूख कम करना [illegible] तभी वह जीवन में आत्मचिन्तन एवं आध्यात्मिक [illegible] सुख कर पायेगा। संतों ने लोक कल्याण [illegible] रखा है कि–

साँई इतना दीजिये जामे कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ साधु न भूखा जाय॥

परिवार के व्यक्तियों को भी ऐसा ही [illegible] Trained [illegible] जाय कि वे [illegible] एवं [illegible] में न उलझें। [illegible] रहकर भी [illegible] मानसिक न हो। कमाई के अनुसार ही [illegible] रहन-सहन रखें। बाह्य दिखावा [illegible] जीवन में धर्म की [illegible] रहेगी। जीवन [illegible] सदा [illegible] है। [illegible] बढ़ती है और [illegible] होता है। [illegible] चाहिये कि [illegible] सच्चे सुख को [illegible]।

जीवन की परिस्थितियाँ परिवर्तनशील है। [illegible] प्रति सद्भाव और सेवा की भावना [illegible] किसी को [illegible] वचन नहीं कहे और न हो किसी के प्रति घृणा और [illegible] प्यार की भावना रखे। [illegible] उचित तथा अनुचित करना [illegible] का अधिकारी बनता है। जीवन [illegible] एक दिन सभी को [illegible] मानव मरणशील है। [illegible] Man is mortal [illegible] सदा सरस ही [illegible] है। कहा है

मीठा बोलो [illegible]
कितने दिनों का [illegible] है।

वाणी में मधुरता [illegible] जीवन का सार है। यह जीवन [illegible] है इस क्षणभंगुर जीवन का [illegible] कोई भी एक [illegible] सा।

कृतज्ञता

उपकारी के उपकार को मानना कृतज्ञता है और उसे भूल जाना उपकार का बदला अपकार से चुकाना है। कृतज्ञता गुण है, कृतघ्नता दोष। जीवन में किसी भी तरह की मदद देने वाला व्यक्ति उपकारी कहलाता है। उसके द्वारा की गई मदद को हमेशा याद रखना उसके उपकार को मानना कृतज्ञता का गुण है। जीवन में यह गुण अति आवश्यक है।

हम अपने द्वारा किसी पर किये उपकारों को तो हमेशा याद रखते हैं किन्तु दूसरों के द्वारा अपने ऊपर किए गये उपकारों को भूल जाते हैं। परिणाम यह होता है कि हममें अहं भाव बढ़ जाता है किन्तु विनम्रता नहीं आ पाती। उपकारियों के प्रति जो आदर भाव रहना चाहिए वह नहीं रहता, समय आने पर उनकी सेवा-शुश्रूषा आदि के द्वारा उनके उपकारों का यत्किंचित् प्रत्युपकार भी नहीं कर पाते। उपकार को मानने वाला ही उपकार का बदला अवसर पर चुका सकता है।

लोकप्रियता

लोकप्रियता व्यक्ति के व्यवहार की कसौटी है। दूसरों के साथ उसका व्यवहार कैसा है? इसका ज्ञान उसकी लोकप्रियता से हो जाता है।

लोकप्रिय बनना आसान बात नहीं है। इसके लिये उच्चकोटि के जीवन-निर्माण की आवश्यकता है। जीवन में कुछ सद्गुण जैसे-परोपकार, सदाचार, विनय-नम्रता, मधुरता, सरलता आदि का होना अति आवश्यक है। जिसका जीवन एवं सद्गुणों से महकता हो उसे कौन नहीं चाहता?

परोपकार का अर्थ है सभी आत्माओं को आत्मतुल्य समझकर परपीड़ा को निजपीड़ा एवं परहित को निजहित समझना। तथा ऐसा समझकर निःस्वार्थभाव से दूसरों के दुःखदर्द में सहयोगी बनना व अन्य प्राणियों की मदद करना। जिस व्यक्ति में यह गुण आ जाता है वह सबका सभी को प्रिय लगता है। धन का दान व उसका परोपकार का लक्ष- [illegible] नहीं हो सकती किन्तु मन में दया एवं

। इससे आदर के बजाय लोगों से तिरस्कार एवं अविश्वास ही प्राप्त होगा। वैसे कटुवादी से लोग दूर ही रहना पसन्द करते हैं। कौआ किसी का क्या लेता है और कोयल किसी को क्या देती है? किन्तु कोयल सबको अच्छी लगती है और कौए को भगा देने का मन होता है। यह मधुर और कटुशब्दों का ही अन्तर है। अतः हमेशा मधुर हितयुक्त एवं उचित शब्द बोलना चाहिये ताकि सुनने वालों का मन सन्तुष्ट और प्रसन्न रहे।

अन्यथा लोक में व्यक्ति की तो निन्दा होती ही है साथ साथ उसके जाति, कुल धर्म की भी वह निन्दा करवाता है। लोगों को धर्म की ओर अप्रीति करता है।

लोकप्रिय बनना सभी चाहते हैं आप भी चाहते। [illegible] इसलिये कि इन सद्गुणों को जीवन में लाना आवश्यक [illegible] तभी आपको लोकप्रियता प्राप्त होगी। आप अपनी लोकप्रियता के माध्यम से कई लोगों का जीवन बना सकते [illegible] [illegible] पथ को [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

बात की शरम है । कुछ लोग [illegible]

से डरवाते हैं किसी के घर जाने [illegible]

[illegible]

[illegible]

पाप छिपाना [illegible]

करना [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

दूर रहता है । [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] है [illegible]

[illegible] है ।

जरा जरा सी बात में क्रुद्ध एव नाराज होने वाला व्यक्ति स्वय भी परेशान रहता है तथा दूसरो के लिये भी परेशानी का कारण बनता है। इसे कोई चाहता नही। उनके स्वभाव के चिढ चिढ़ेपन के कारण दूसरे व्यक्ति उनके पास आने, बैठने और बोलने मे भी हिचकिचाते है।

शांत व्यक्ति दूसरो के अवगुणों अपराधो के प्रति इशारे ध्यान आकर्षित करेगा, जिससे सुनने वाले को रोष नहीं किन्तु अपनी भूल का एहसास होगा लज्जा का अनुभव होगा। उसके स्वभाव की मधुरता दूसरे को बोध देगी। इसके बजाय दूसरो के अवगुणों एव अपराधों के लिये गुस्से मे आकर कहने या सुधारने की चेष्टा करने से सामने वाले व्यक्ति को उसकी गलती महसूस होने के बजाय क्रोध आयेगा एव वह सामना कर बैठेगा।

सदा शांत प्रकृति वाला व्यक्ति स्वय भी आसानी से [illegible] लगता है। उस कहने की हिम्मत कोई भी कर सकता है। वाणी से कोई [illegible] भी [illegible] नहीं करता।

[illegible] के [illegible] हो जाते है। [illegible] कोई

क्रोध कृशानुवत्पश्चादनुत्प दहति या न वार अर्थात् क्रोध उत्पन्न होकर सबसे पहले अपने आश्रय स्थान को जला देता है। यह जब मन में घुसता है तो व्यक्ति का विवेक और बुद्धि मारी जाती है। क्रोध व्यक्ति के अहंकार को उभारता है। घायल अहंकार ही क्रोध के रूप में परिवर्तित होता है। क्रोध एक आवेग है जो विभिन्न रूपों में प्रकट होता है। क्रोध का शरीर और मन दोनों पर अनिष्टकर प्रभाव पड़ता है। क्रोध आत्मा का शत्रु है।

[illegible] जैसे महान व्यक्तियों ने क्रोध पर विशेष [illegible] और सफलता से विजय पायी थी। क्रोध पर विजय पाने के लिए आत्म संयम की आवश्यकता होती है। क्रोध को मौन रहकर टाला जा सकता है। क्रोधी व्यक्ति के प्रति भी सद्भाव रखा जाय और उस क्रोध की [illegible] का स्मरण करवाया जाय। क्रोध को [illegible] से जीता जा सकता है।

क्रोध के आवेश में व्यक्ति विवेक खो देता है और कभी-कभी ऐसे काम कर बैठता है कि [illegible]

ग दरे। सोने का हरिण होना असम्भव है फिर भी राम
ह में पड़कर उसके पीछे भागे और जिसका दुखदायी
र दर्द भुगतना पड़ा।

समाज के जितने नाते रिश्ते हैं वे सब मोह की भावना
से ही बंधे हुए हैं। यह मेरा है, वह मेरा है की भावना
मोह की ही प्रतीक है। सभी आयु वर्ग के व्यक्ति मोह की
रंग मे सुवासित होते रहते हैं। यह मोह धीरे धीरे
गा ही जाता है। एक स्थिति ऐसी आती है कि जिस वस्तु
के प्रति मोह बढ़ जाता है उससे अपने को दूर रखना ही
न नहीं होता है और उसके अभाव मे जीवन दुःखमय
जाता है।

व्यक्ति का मोह के सम्बन्ध में विचार करना
चाहिए। मोह की आसक्ति दुःख का कारण बनती है।
इससे व्यक्ति अपने कर्तव्यों का पालन नहीं कर सकता
है और मनोविकारों से ग्रस्त हो जाता है। इस मोह पर
विजय पाने के लिए हर सम्भव प्रयत्न करने चाहिए। अन्यथा
मोह के बन्धन में [illegible]
[illegible] हो सकता है।

एक बार जब किसी के मन में ईर्ष्या की भावना पैदा हो जाती है तो वह उस व्यक्ति के मन में बेचैनी पैदा करती रहती है। उस बेचैनी के क्षणों में व्यक्ति ईर्ष्या के वशीभूत होकर किसी भी प्रकार का कर्म कर सकता है। ईर्ष्या से व्यक्ति स्वयं अपना तो पतन करता ही है वह सारे मानव समाज के लिये समस्या बन जाता है।

व्यक्ति को ईर्ष्या की भावना से दूर रहना चाहिए। किसी से भी क्यों ईर्ष्या की जाय? हमें अपनी रुचि और भावना के साथ जीवन में गौरव अनुभव करना चाहिये। ईर्ष्या रूपान भगाने की जड़ है। इसे मन से पूर्णतया बाहर कर देना चाहिए। मन को सद् प्रवृत्तियों में लगाना चाहिये। इससे ईर्ष्या की भावना पास में भी नहीं फटकती और व्यक्ति का जीवन सुखमय हो जायगा।

कामराग की तीव्रता व्यक्ति को अंधा बना देती है। उसके सारे तत्त्व को खत्म कर देती है। उसका धैर्य, साहस आदि [illegible] गुणों को नष्ट कर देती है। काम की शक्ति काल से भी महान् होती है रावण जैसे महान व्यक्तित्व के धनी को भी इस कामराग ने सीताजी के सम्मुख कायर, कमजोर बनाकर बर्बाद कर दिया।

कामराग को जीतनेवाला व्यक्ति ही जीवन में सुखी बनता है। उसके जीवन में किसी तरह की बेचैनी या परे[illegible] नहीं रहती। भोगों की तृष्णा आग के तुल्य है। [illegible] जीवन मृत्यु तक आ जाती है किन्तु तृप्ति नहीं आती। [illegible] प्राणी के भोगवस्तु [illegible] उस विषयकूप [illegible] देता है जिससे उसे भान नहीं हो पाता कि कामराग [illegible] सुखों के साथ दुःख भी रहा हुआ है, और यह [illegible] भी उस पर आक्रमण कर सकता है।

कामराग को जीतने के लिए [illegible] और [illegible] [illegible] आवश्यक है। [illegible]